

कर्षण (wie eben; 1) a) adj. *hinundherzerrend, mitnehmend, überwältigend*; am Ende eines comp.: *अमित्र* MBh. 3, 879. *अरि* 13, 215. N. 12, 16. *शत्रु* 20, 8. MBh. 3, 699. R. 4, 38, 51. 5, 3, 1. 92, 20. — b) *sich hinziehend* (in der Zeitdauer): न *एवर्गस्य चवर्गे कालविप्रकर्षस्त्वत्र भवति तमाहुः कर्षण इति* AV. Prāt. 2, 39. — 2) n. a) *das Hinziehen, Herbeiziehen*: सैभतेदोषकर्षणेन Ç. x. 69, 15, v. l. — b) *das Hinundherziehen, Zausen, Mitnehmen, Peinigen*: कुञ्जा R. 2, 78 in der Unterschr. शरीरकर्षणात्प्राणाः क्षीयन्ते प्राणिनां यथा । तथा राज्ञामपि प्राणाः क्षीयन्ते राष्ट्रकर्षणात् ॥ M. 7, 112. व्यसनं भेदनं चैव शत्रूणां कारयेत्ततः । कर्षणं भीषणं चैव युद्धे चैव वल्लभम् ॥ MBh. 15, 238. 3, 1284. Suçr. 1, 31, 21. — c) *das Spannen* (des Bogens): भव्यमानमतिमात्रकर्षणात्तेन वज्रपरुषस्त्वं धनुः Ragh. 11, 46. धनुष्कर्षण 7, 59. — d) *das Pflügen; Landbau* Vop. 7, 89. H. 864. M. 4, 5. MBh. 2, 525. Bhāg. P. 7, 11, 19. gepflügtes Land MBh. 3, 10082; vgl. 10080, wo कर्षणानि für कर्षकानि zu lesen ist.

कर्षणि (wie eben) f. *ein unkeusches Weib* (die Männer heranziehend) Uṇ. im ÇKDr.

कर्षणी f. N. einer Pflanze (s. तीरिणी) R'ān. im ÇKDr. — Vgl. कर्षिणी unter कर्षिन्.

कर्षपाल 1) m. *Terminalia Bellerica Roxb.* AK. 2, 4, 2, 39. — Dieser Baum heisst auch *अल*, weil seine Früchte als *Würfel* gebraucht wurden. कर्ष ist in der Bed. *eines best. Gewichts* (die Frucht der Terminalia?) synonym mit *अल*. — 2) f. *फलम्* Emblica officinalis Gaertn. (s. आमलकी) Ratnam. im ÇKDr.

कर्षायण = कार्षायण gaṇa प्रसादि zu P. 5, 4, 38.

कर्षिन् (von कर्ष्) 1) adj. a) *ziehend, schleppend*: स्तम्बरेमा मुखप्रद्वलकर्षिणः Ragh. 3, 72. Mākh. 98, 6. — b) *anziehend, einladend*: प्राणात्समधुगन्धकर्षिणीः पानभूमिरचनाः Ragh. 19, 11. — c) *das Feld pflügend, Landmann*: परिदृष्ट भूमिं यावच्च खन्यते तत्र कर्षिभिः Kathās. 18, 41. — 2) f. कर्षिणी a) *Gebiss am Pferdezaum*. — b) Name einer Pflanze (= कर्षणी, तीरिणी) Gāṭh. im ÇKDr.

कर्ष (von 2. कर्ष्) f. *Furche, Graben, Einschnitt* Çr. Br. 1, 8, 4, 3. 13, 8, 2, 10. Kāṭ. Çr. 2, 1, 3, 26. 4, 19. 25, 8, 3. Āc. Gṇh. 2, 5. Kauç. 31. Suçr. 2, 33, 17. Viṣṇusūtra im Çāṇḍhāv. ÇKDr. Nach den Lexicographen: Fluss Uṇ. 1, 81. AK. 3, 4, 29, 224. H. 1080. Med. sh. 9. = इष्टिवात (ÇKDr. इष्टिवात) Med. = ऋषिकुल्ययोः (!) H. an. 2, 560. कर्ष m. soll bedeuten: 1) *वार्ता* AK.; nach Rām. = *कृषि* Ackerbau, nach Bhār. = *जीविका Lebensunterhalt*, ÇKDr. — 2) *Feuer von trockenem Kuhdünger* (vgl. करोष) Uṇ. AK. Med. = *तुयायि* H. an.

कर्हि (von 1. क) adv. *wann?* P. 5, 3, 21. Vop. 7, 101. कर्हि स्वित्सा तं इन्द्र चेत्यासत् RV. 10, 89, 14. कर्हि स्वित्तिन्द्र यन्मिन्वीरैर्वीरिणी-ऋषे 6, 33, 2. Statt des fut. kann auch das praes. stehen P. 3, 3, 5. Vop. 25, 4. Mit चिद् irgendwann H. 1333. यद्य कर्हि कर्हि चिच्छ्रूयातमिमं ह्वम् RV. 8, 62, 5. 5, 74, 10. N. 24, 18. MBh. 1, 6262. कर्हि स्म चित् Bhāg. P. 5, 14, 22. Sehr häufig in einem negativen Satze M. 2, 4, 40. 97. 4, 77. 6, 50. 7, 39. 84. 9, 82. 89. 10, 95. 11, 24. 149. 223. N. 1, 20. 2, 4. 17. 3. 19, 7. 22. 16. R. 1, 9, 45. 3, 46, 13. Pañkāt. Pr. 11. I, 102. II, 22. Bhāg. P. 1, 3, 14. कर्ष्यि *irgendwann* Bhāg. P. 5, 17, 24.

1. कल्, कालते *tönen; zählen* Dhātup. 14, 26.

2. कल्, कल्पति Dhātup. 33, 13 (*gehen, zählen*). 1) *treiben, antreiben*: दण्डोपघाते गाः कल्पति P. 3, 4, 48, Sch. जवस्य मम पर्यन्तः किं नु स्यादिति मेदिनीम् । कल्पयत्तमिव (von einem Pferde in schnellem Laufe) Kathās. 18, 90. आपाने पानकलिता दैवेनाभिप्रचोदिताः । एरकात्रपिभिर्वज्रैर्निघ्नघुरितरेतरम् ॥ MBh. 1, 620. राजसा हि सुपुद्गेन भवत्वद्य रणानि । आहारकलिताः सर्वे युगपत्कपिभोजनाः ॥ R. 5, 83, 10. कालः कल्पयतामरुम् (कृष्टः) Bhāg. 10, 30. कालः कल्पतां प्रभुः Bhāg. P. 3, 29, 38. Schlegel: *tempus ego numeros modulantium*, Burnour: *le Temps, le plus puissant de ceux qui ont l'empire*. Vgl. 3. कल्. — 2) *halten, tragen*: भित्तभक्तैः करकलितगङ्गाम्बुतरैः Çāntiç. 4, 18. करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिः Bhairavadhājāna im ÇKDr. स्नेह्मनिवह्मनिधने कल्पयसि कर्वालम् Gtr. 1, 14. कलं कल्पते (dat. des partic.) 16. कलितललितवनमाल 17. कलितकमला Çrut. (Br.) 40. — 3) *thun, machen, bewerkstelligen*: सदा पान्थः पूषा गगनपरिमाणं कल्पयति Bhār. 3, 20. तृणात्कल्पते (med.) क्रीयत्वपा कामपि Sāh. D. 40, 10. कल्पयति तिलकं तथा शकलम् 57, 18. Etwas irgendwohin thun, irgendwo anbringen (oder anheften, auflegen, auftragen; vgl. u. — घा): कल्पय वलयश्रेणो पाणौ पदे कुरु नूपुरौ Gtr. 12, 26. मरुतसकलकलितकलधितलपि 8, 4. einen Laut hervorbringen: मधुपकुलकलितराव 11, 49. विहगाः कदम्बसुरभाविह गाः (= वाचः) कल्पयन्नुत्तपामनेकलयम् Çiç. 4, 36. मायतः कल्पयन्तु चूतशिखरे केलीपिकाः पञ्चमम् Sāh. D. 79, 15. तं च क्रीडाकलितललिताव्यक्तनर्माभिलापम् Kathās. 23, 94. Vgl. कल्. — 4) *mit Etwas versehen, kалит versehen mit*: अन्यत्कथमिव पुलकैः कलितं (कलितं? Sch. = पुक्तं) मम मात्रकं करस्पृशात् Vikr. 57. धैर्यकलित Çiç. 9, 59 (Sch. = कलितधैर्य). — 5) *bemerken, wahrnehmen, in Betracht ziehen*: पैदनां ह्यापद्वितीयां कल्पय चकार Naish. 3, 12. धन्यः को ऽपि न विक्रियां कल्पयति प्राप्ते नवे यौवने Bhār. 1, 71. Rāgātā. 4, 629. Çiç. 9, 83. कलित = वेदित H. an. 3, 257. = विदित Triç. 3, 3, 154. Med. l. 102. — 6) *für Etwas ansehen, halten*: स पश्चात्संपूर्णः कल्पयति (v. l. गणयति) धरित्रो तृणसमाम् Bhār. 2, 37. इदानीमस्माकं तृणमिव समस्तं कल्पयताम् Çāntiç. 4, 15. व्यालिनलयमिलनेन गरलमिव कल्पयति मलयसमीरम् Gtr. 4, 2. कल्पयामि वलयदिमणिभूषणम् — बहुद्वेषणम् 7, 7. Çiç. 9, 58. कलित = गणित (gezählt, für Etwas angesehen) Çāṇḍar. im ÇKDr. — 7) *denom. von कलि (ein best. Würfel) den Kali ergreifen* (vgl. कृत्यम् P. 3, 1, 21. Vop. 21, 17. अचकलत् P., Vārt. Vop. 8, 112. 21, 17. — 8) *vom partic. कलित kennen* die Lexicographen noch folg. Bedd.: = प्राप्त erlangt Triç. 3, 3, 154. H. an. 3, 257. Med. l. 102 (vgl. धैर्यकलित Çiç. 9, 59, was nach den Schol. = कलितधैर्य sein soll). = भेदित gespalten, getrennt Çāṇḍar. im ÇKDr. sounded indistinctly, buzzed, murmured, etc. (vgl. कल) Wils. कलित am Ende eines comp. nach einem subst. in gleichem Casusverhältniss gaṇa कृतादि zu P. 2, 1, 59.

— अव, partic. अवकलित *gesehen, wahrgenommen* Dhār. im ÇKDr. u. अवकलित.

— व्यव, व्यवकलित *abgezogen, subtrahiert; n. Subtraction* Lilāv. im ÇKDr. — Vgl. u. — सम्.

— घ्रा 1) *schütteln*: मारुताकलितास्तत्र दुमाः MBh. 1, 2353. ईषदाकलितं (*sich schüttelnd, zitternd*) चापि क्रोधाद्भुतपदं स्थितम् 4, 762. केशानाकलयन् (मरुत्) Bhār. 1, 50 (die var. l. hat आकुलयन्, welches auch wegen des grössern Gleichklangs mit dem folgenden मुकुलयन् vor-